अनुज सिन्हा

क्या गंगा कभी स्वच्छ होगी?

टेम्स इंग्लैंड की सबसे लंबी नदी है। वर्ष 1878 में लंदन के बार्किंग के पास नदी में एक भयंकर हादसा हो गया था। इसमें करीब 600 लोगों की डूबने से मौत हो गई थी। अधिकांश लोगों की मौत नदी में फैले भयानक प्रदूषण के कारण हुई थी। उस समय नदी का पानी सड़े हुए अंडे की तरह बदबू मारता था और उसमें ऑक्सीजन का स्तर इतना कम था कि कोई भी जलीय जीव जीवित नहीं रह पाता था।

इस नदी प्रणाली में 38 सहायक नदियां और करीब 80 टापू आते हैं जो इंग्लैंड के लिए बेहद अहम हैं। इसके जलग्रहण क्षेत्र (कैचमेंट) में दक्षिण पूर्वी और पश्चिमी इंग्लैंड का कुछ क्षेत्र शामिल है। सदियों से इस नदी का इस्तेमाल परिवहन, मछली पालन, खेल गतिविधियों और लंदन की पेयजल आपूर्ति के लिए होता आया है। औद्योगीकरण और शहरीकरण के कारण इसके पानी की गुणवत्ता लगातार गिरती गई और अंततः वर्ष 1957 में वैज्ञानिकों ने इसे जैविक दृष्टि से मृत नदी घोषित कर दिया।

टेम्स में अपशिष्ट पदार्थों और सीवेज को डंप करने से रोकने के लिए कानून बनाया गया। इसी दौरान आज से करीब 25 साल पहले सप्ताहांत में हमने समुद्र के दक्षिण छोर के उस क्षेत्र का दौरा किया जहां टेम्स नदी सागर से मिलती थी। लेकिन इस यात्रा के अगले ही सप्ताह हमारे शरीर में खुजली होने लगी थी और हमें इसका अफसोस होता रहा कि हम वहां क्यों गए। यानी नदी के पुनरुद्धार के प्रयासों के नतीजे अब भी साफ नज़र नहीं आ रहे थे।

नदी को नियंत्रित करने के लिए वहां कांक्रीट के तटबंध और खंबे बनाए गए थे। पूरे नदी के मार्ग पर ज़मीनी परिवहन को आसान करने के लिए निर्मित पुल और पुलियाओं की भरमार थी। ड्रैगन फ्लाई, मेंढकों, मछलियों, पक्षियों, घोंघों इत्यादि के आवास अब भी खतरे में थे।

पिछले दो दशकों के दौरान जलीय इको सिस्टम को बढ़ावा देने के लिए वहां मिट्टी के तटबंध बनाए गए हैं। ऑक्सफोर्ड के निकट पक्षी प्रेक्षकों ने कई प्रकार के पक्षियों के देखे जाने की जानकारी दी है। उत्साही प्रेक्षकों को डेस, बारबेल, पिक और अन्य कई प्रजातियों की मछलियां देखने को मिली हैं। उत्तरी समुद्र में ज्वार-भाटे के दौरान सील और अन्य स्तनपायी जंतु देखने को मिल रहे हैं।

हमने हाल ही में ऑक्सफोर्ड के पास नदी के तट पर एक शानदार दिन बिताया। यह क्षेत्र वनस्पति उद्यान के काफी करीब था। पिछले पांच दशकों के दौरान टेम्स नदी के पुनरुद्धार के प्रयासों के कारण आज इस नदी में रोविंग, क्याकिंग, सेलिंग और स्विमिंग जैसी गतिविधियां फिर से शुरू हो चुकी हैं।

नदी को साफ करने के लिए कार्यकर्ता बहुत ही उत्साह के साथ अपना नाम दर्ज करवाते हैं। गैती और फावड़ों से लैस ये कार्यकर्ता नदी के तटों को साफ करते हैं और कचरा एक जगह एकत्र कर देते हैं ताकि स्थानीय नगरीय निकाय के लोग उन्हें आसानी से ले जा सकें। कार्यकर्ताओं को प्रोत्साहित करने के लिए सफाई करते हुए इनकी तस्वीरें सोशल नेटवर्क पर डाली जाती हैं और कई व्यापारिक प्रतिष्ठानों द्वारा लकी ड्रॉ भी निकाले जाते हैं।

टेम्स को वर्ष 2010 में प्रतिष्ठित 'थीस रिवर प्राइज़' हासिल हुआ। इस वर्ष के अन्य नामांकनों में येलो रिवर (चीन), हटा झील (ऑस्ट्रेलिया) और स्मिरनिख नदी (जापान) शामिल थे। क्या कभी गंगा नदी भी यह पुरस्कार जीत पाएगी? गंगा भारत की सबसे बड़ी और सबसे पवित्र नदी है। यह देश के 11 राज्यों की 40 फीसदी आबादी की पानी की ज़रूरत को पूरा करती है। करीब 50 करोड़ लोग प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से इस नदी पर निर्भर हैं। लेकिन इस पर प्राकृतिक और मानव निर्मित दोनों खतरे मंडरा रहे हैं।

एक लाख से अधिक आबादी वाले 29 शहर और 50 हज़ार से एक लाख की आबादी वाले 23 शहर इस विशालकाय नदी के किनारों पर बसे हैं। इन शहरों और अन्य अनेक गांवों व बस्तियों के लोग इसी में नहाते-धोते हैं और मल-मूत्र विसर्जित करते हैं। इस वजह से यह नदी एक विशालकाय नाले में तबदील हो गई है। चमड़ा बनाने के कारखाने, रसायन संयंत्र, कपड़ा मिलें, शराब की फैक्ट्रियां, कसाईखाने अपने अपशिष्ट पदार्थों को बगैर शोधित किए ही गंगा में डाल देते हैं। इन जगहों से गंगा में कितने अपशिष्ट पदार्थ डालते होंगे, इसका केवल अंदाज़ा ही लगाया जा सकता है। लेकिन इससे गंगा नदी इस कदर प्रदूषित हो रही है कि उसे वापस अपने मूल स्वरूप में लौटाना काफी मुश्किल होगा।

1854 में बना हरिद्वार बांध और इसके एक सदी बाद निर्मित फरक्का बराज के मिले-जुले फायदे और नुकसान रहे हैं। इस नदी प्रणाली में करीब 300 छोटे-बड़े बांधों के निर्माण की योजना है। इस योजना को लेकर विशेषज्ञों की अलग-अलग राय है। गंगोत्री ग्लेशियर हर साल बड़ी तेज़ी से कम होता जा रहा है और जलवायु परिवर्तन को इसकी वजह बताया जाता है।

गंगा नदी को स्वच्छ बनाने के मकसद से वर्ष 1986 में राजीव गांधी सरकार ने गंगा कार्ययोजना की शुरुआत की थी। लेकिन यह नदी के प्रदूषण को कम करने में सफल नहीं रही और अंततः वर्ष 2000 में इसे आधिकारिक रूप से बंद कर दिया गया। हमें उन कारणों की पड़ताल करनी चाहिए कि आखिर इस योजना पर इतनी भारी-भरकम राशि खर्च करने के बावजूद यह सफल क्यों नहीं हो पाई।

पिछले कुछ सालों के दौरान गंगा को स्वच्छ बनाने के मकसद से अनेक सामाजिक और धार्मिक आंदोलन भी हुए। इनमें से कुछ समूहों का दावा है कि उनके प्रभाव के कारण सरकारों और प्रशासन को कई निर्णय लेने पड़े जिनकी वजह से नदी के पानी की गुणवत्ता में सुधार हुआ।

मोदी सरकार ने गंगा नदी को स्वच्छ बनाने को लेकर प्रतिबद्धता दर्शाई है। सरकार की ओर से जल संसाधन मंत्रालय को इस नदी प्रणाली में सुधार के लिए स्पष्ट निर्देश मिले हुए हैं। गंगा नदी को स्वच्छ बनाने के क्या तरीके और रास्ते हो सकते हैं, यह बहुत ही स्पष्ट है। इनमें ऊपरी मैदानी स्थलों पर निर्माण कार्य को नियंत्रित करने, सभी उद्योगों पर नियम लागू करने, सीवेज के पानी को परिशोधित करने और लोगों में जागरूकता पैदा करना शामिल है। इस मिशन की प्रगति की लगातार निगरानी और इसमें समय-समय पर बदलाव ज़रूरी है।

यमुना नदी की स्थिति तो और भी बदतर है। वह गंगा से भी ज़्यादा प्रदूषित है। हाल ही में हुए एक अध्ययन के अनुसार तमिलनाडु की नदी वसिस्ता सबसे ज़्यादा प्रदूषित पाई गई है। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) के अनुसार देश में प्रदूषित नदियों की कुल लंबाई 12 हज़ार कि.मी. से ज़्यादा है जो गंगा नदी की कुल लंबाई की करीब पांच गुना है। इसलिए ज़रूरत तो इन सभी प्रदूषित नदियों के किनारों पर स्थित 650 शहरों व कस्बों पर ध्यान देने की है, न कि केवल गंगा किनारे स्थित 50 शहरों पर। अगर सरकार वाकई गंभीर है तो इस सम्बंध में युद्ध स्तर पर प्रयास करने होंगे। ***(स्रोत फीचर्स)***